अर्थ के साथ

5. हिन्दी संस्मरण साहित्य : एक परिचय

प्रस्तावना—हिन्दी साहित्य के इतिहास में गद्य-साहित्य का अपना विशेष महत्व है। हिन्दी गद्य विधाओं को दो धाराओं में विभाजित किया गया है। प्रमुख गद्य विधाएँ तथा गौण गद्य विधाएँ। हिन्दी की प्रमुख गद्य विधाओं में नाटक, निबन्ध, उपन्यास, कहानी तथा गौण विधाओं में जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा रिपोर्ताज, यात्रावृत्तान्त, डायरी, साक्षात्कार है। हिन्दी साहित्य की अन्य नवीनतम विधाओं में संस्मरण एक महत्वपूर्ण विधा है। जीवनीपरक साहित्य का यह अत्यन्त ललित एवं लघु कलात्मक अंग है। संस्मरण, जीवनी तथा आत्मकथा का सम्मिलित रूप है जिसमें लेखक अपनी स्मृतियों को बड़ी कोमलता से लेखनीबद्ध करता है। जीवन अभिव्यक्ति का यह रूप स्मरण पर आधारित है। भारत काव्यशास्त्र में स्मरण अलंकार रूप में प्रयुक्त होता रहा है। लेकिन आज संस्मरण एक स्वतन्त्र विधा के रूप में प्रचलित है।

संस्मरण गद्य की एक आत्मनिष्ठ विधा है। संस्मरण लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन तथा उसके सम्पर्क में आए अन्य व्यक्तियों के जीवन के कुछ पहलुओं को याद कर, उन्हें लेखनीबद्ध करता है। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में नित्य ही कितने व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं। साधारण व्यक्ति इन क्षणों को भूल जाता है, किन्तु एक संवेदनशील लेखक के दिलो-दिमाग में यह क्षण सदा-सर्वदा विद्यमान रहते हैं। इन क्षणों की याद जब लेखक को व्याकुल कर देती है, तभी संस्मरण साहित्य का सृजन होता है।

पश्चिम में संस्मरण के लिए दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है—रेमिनिसेंसेज और मैमायर्स। जब लेखक अपने सम्बन्ध में लिखता है तो उसे रेमिनिसेंसज कहा जाता है और जब किसी दूसरे के लिए लिखता है तो उसे मैमायर्स कहते हैं। किन्तु हिन्दी साहित्य में लेखक जब अपने सम्बन्ध में लिखता है, तो इन दोनों के लिए संस्मरण शब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

संस्मरण लेखक के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित है इसलिए इसे गद्य की आत्मनिष्ठ विधा कहा जाता है। संस्मरण की भाँति रेखाचित्र का सम्बन्ध भी व्यक्ति जीवन से होता है इसलिए इन्हें मिलती-जुलती विधाएँ माना जाता है लेकिन संस्मरण में विवरण की अधिकता रहती है और रेखाचित्र में वर्णन की। आधुनिक युग में संस्मरण की स्वतन्त्र सत्ता है।

संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति सम् + स्मृ + ल्युट (अनु से हुई है जिसका अर्थ है—सम्यक स्मृति। यानि सहज आत्मीयता तथा गम्भीरतापूर्वक किसी व्यक्ति, घटना, दृष्य अथवा वस्तु का पूर्णरूपेण स्मरण करना, 'संस्मरण' शब्द अंग्रेजी के मैमायर्स के समानार्थक के रूप में हिन्दी में प्रयुक्त होता है। मैमायर्स में लेखक किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ बिताए समय में होने वाले मधुर-कटु अनुभवों का वर्णन करता है।)

संस्मरण किसी स्मर्यगण की स्मृति का शब्दांकन है। स्मर्यगण के जीवन के वे पहलू वे सन्दर्भ चारित्रिक वैशिष्ठ जो स्मरणकर्ता को स्मृत रह जाते हैं। उन्हें वह शब्दांकित करता है। स्मरण वहीं रह जाता है जो महत विशिष्ट, विचित्र और प्रिय हो। संस्मरण में विषय और विशयी दोनों रूपान्तरित होते हैं। डॉ. गोविन्द त्रिगुणाय

Scanned with CamScanner

संस्मरण में व्यक्तित्व को अधिक महत्व देते हैं। उनका कथन है, '..... कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ स्मरणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशिष्टताओं से विशिष्ट बनाकर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त करता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं।'

हिन्दी साहित्य कोष के अनुसार, "स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखित लेख या ग्रन्थ को संस्मरण कह सकते हैं।"

महादेवी वर्मा ने अपने स्मृति चित्रों के सम्बन्ध में लिखा है, "इन स्मृति चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वभाविक भी था। अँधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की धुँधली या उजली परिधि में लाकर ही देख सकते हैं। उसके बाहर तो वे अनन्त अंधकार के अंश हैं।"

संस्मरण में मुख्यत: स्मृति को ही महत्व दिया जाता है और यह स्मृति किसी भी रूप में हो सकती है—कोई विशेष घटना, परिस्थिति, पात्र, सुख-दुख की स्मृतियाँ आदि। संस्मरण लेखक का आधार समाज के केवल उच्च, राजनेता, भद्र पुरुष न होकर आम व्यक्ति तथा सजीव निर्जीव वस्तुएँ भी संस्मरण साहित्य का विषय बन सकती हैं।

संस्मरण के तत्व—संस्मरण भी गद्य की अन्य विधाओं की तरह एक स्वतन्त्र विधा है। इसके भी कुछ निर्धारक तत्व हैं।

वर्ण्य विषय—इसमें संस्मरण लेखक अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना या सम्पर्क में आए किसी अविस्मरणीय व्यक्ति के चरित्र को प्रस्तुत करता है। संस्मरण विधा अन्य विधाओं की तरह कल्पना प्रस्तुत न होकर यथार्थ के धरातल पर खड़ी है। संस्मरण के वर्ण्य विषय वास्तविक होने के साथ विश्वसनीय और बोधगम्य होते हैं। संस्मरण लेखक भी कल्पना का प्रयोग करते हैं। लेकिन रूप बदलकर। संस्मरण का वर्ण्य वास्तविक होता है और आनन्द काल्पनिक।

पात्र-योजना—संस्मरण का दूसरा तत्व पात्र-योजना है। संस्मरण व्यक्ति जीवन से सम्बन्धित होता है इसमें लेखक उसके सम्पर्क में आए विभिन्न व्यक्तियों जैसे साहित्यकारों, राजनेता, प्रसिद्ध व्यक्ति आदि की स्मृतियों को शब्दांकित करता है। पहले ऐसा माना जाता था कि संस्मरण में केवल प्रसिद्ध व्यक्ति के चरित्र को ही चित्रित किया जाता है। लेकिन महादेवी वर्मा के संस्मरणों को देखने के पश्चात् यह धारणा गलत साबित हो गई। उनकी रचनाएँ स्मृति की रेखाएँ अतीत के चलचित्र, पथ के साथी इस बात का प्रमाण है। कि संस्मरण केवल प्रसिद्ध व्यक्तियों पर हीं नहीं, बल्कि सामान्य व्यक्ति तथा सजीव निर्जीव वस्तुओं तथा प्राणियों पर भी लिखें जा सकते हैं। पात्र योजना के माध्यम से ही लेखक अपने सम्बन्ध में तथा दूसरों के विषय में अपने अनुभव लिखकर बहुमूल्य जानकारी देता है।

अतीत की स्मृति—संस्मरण अतीत की स्मृति पर आधारित होता है—इसमें संस्मरण का अपने जीवन की विशेष घटनाएँ, कुछ ऐसे पल जो उसे याद रह जाते हैं।

सहेजकर उन यादों के लिखित रूप में व्यक्त कर देता है जिसे पढ़कर पाठकों को लगता है कि वह उस घटना से रू-बरू हो रहा है।

चित्रात्मकता—संस्मरण साहित्य की एक प्रमुख विशेषता है कि वह जितना चित्रात्मक होगा, उतना ही अधिक सफल होगा, क्योंकि चित्र मनुष्य मस्तिष्क पर अधिक प्रभाव डालते हैं। लेखक सोच-समझकर चुन-चुन कर शब्दों का प्रयोग करता है चित्र सहज ही बनने लगे।

तटस्थता—तटस्थता भी संस्मरण की एक मुख्य विशेषता है। जब किसी व्यक्ति घटना, स्थान के बारे में स्मृति के सहारे लिखा जाता है, तब यह जरूरी होता है कि जो भी लिखा जा रहा है, यह तथ्यपूर्ण हो, कुछ ऐसा न लिखा जाए, जो किसी व्यक्ति के बारे में गलत जानकारी दे।

उद्देश्य—संस्मरण साहित्य का मुख्य उद्देश्य अपनी अनुभूतियों को संवेदना के धरातल पर स्थापित करके, मोहक व मधुर स्मृतियों को भावात्मक शैली में व्यक्त करने के साथ उन स्मृतियों से पाठक का साक्षात्कार करवाना होता है। ये स्मृतियाँ जहाँ आत्मसंतोष प्रदान करती हैं, तो वहीं दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य भी करती हैं।

Scanned with CamScanner